

प्रेस विज्ञप्ति

जेएमआई ने 'कल्चरल कनेक्ट्स एंड डिप्लोमेटिक डायलॉग्स' पर कार्यशाला आयोजित की; अपने प्रतिष्ठित एलुमनाई- इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति हरवीर सिंह और आईपीएस डॉ. हनीफ कुरैशी को किया सम्मानित

नई दिल्ली, 02 नवंबर, 2025

अपने 105वें स्थापना दिवस समारोह के क्रम में, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) ने विश्वविद्यालय के अंसारी ऑडिटोरियम में 'कल्चरल कनेक्ट्स एंड डिप्लोमेटिक डायलॉग्स': द इंडियन वे इन द 21 सेंचुरी" शीर्षक पर एक उच्चस्तरीय पैनल चर्चा का आयोजन किया। इस विशिष्ट पैनल चर्चा में श्री वी. श्रीनिवास, आईएस, सचिव, भारत सरकार, प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत विभाग (डीएआरपीजी) और पेंशन एवं पेंशनभोगी कल्याण विभाग; श्री फैज अहमद किदवई, आईएस, महानिदेशक, नागरिक उड्डयन महानिदेशालय तथा एम्बेसडर वीरेंद्र गुप्ता, आईएफएस (सेवानिवृत्त), पूर्व महानिदेशक, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) शामिल थे।

उनके साथ जेएमआई के कुलपति प्रो. मजहर आसिफ़; जेएमआई के रजिस्ट्रार प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी; छात्र कल्याण की डीन प्रो. नीलोफर अफज़ल; प्रो. राजीव नयन, एनएमसीपीसीआर और प्रो. असलम खान, एनएमसीपीसीआर ने कूटनीति के प्रति भारत के अनूठे दृष्टिकोण पर एक समृद्ध और आकर्षक संवाद किया, जो नैतिकता, संवाद और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित है।

अपने प्रारंभिक भाषण में, प्रोफ़ेसर मोहम्मद महताब आलम रिज़वी ने ज़ोर देकर कहा कि "भारतीय कूटनीति का जन्म सत्ता के नौकरशाही गलियारों में कभी नहीं हुआ, बल्कि यह नैतिकता, संस्कृति और धर्म में निहित ऋषियों की दार्शनिक कल्पना में युगों-युगों से आकार लेती रही है।" उन्होंने कहा कि आज की खंडित दुनिया में शांति की कुंजी सॉफ्ट पावर, संवाद और सहानुभूति में निहित है। इस बात पर प्रकाश डालते हुए कि संस्कृति किस प्रकार समझ के सेतु का काम करती है, प्रोफ़ेसर रिज़वी ने योग और आयुर्वेद जैसे उदाहरणों का हवाला दिया, जिन्होंने भारत को दुनिया से जोड़ा है। उन्होंने कहा, "भारतीय कूटनीति ने हमेशा 'विचार' को संपर्क के साधन के रूप में महत्व दिया है, न कि बल प्रयोग के रूप में।" माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस संदेश को दोहराते हुए कि यह "युद्ध का नहीं, बल्कि संवाद और कूटनीति का युग है," उन्होंने आगे कहा कि भारत की सॉफ्ट पावर देश की विदेश नीति को "नैतिक आधार और भावनात्मक व्याकरण" प्रदान करती है।

जामिया की विरासत पर बोलते हुए, श्री फैज़ किदवई ने विश्वविद्यालय को "सिर्फ़ एक विश्वविद्यालय नहीं, बल्कि एक विचार, भारत की आत्मा का जीवंत प्रतिनिधित्व" बताया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि शिक्षा "न सिर्फ़ दिमाग़ को तेज़ करे, बल्कि दिल को भी मज़बूत करे", और साहस, आस्था और दृढ़ विश्वास को इसके मूल मूल्यों के रूप में रेखांकित किया। "द इंडियन वे" पर विस्तार से चर्चा करते हुए, श्री किदवई ने इसे एक ऐसे दर्शन के रूप में वर्णित किया जो परंपरा और आधुनिकता, महत्वाकांक्षा और विनम्रता के

बीच संतुलन स्थापित करता है, और वसुधैव कुटुम्बकम् के प्राचीन आदर्श, यानी 'दुनिया एक परिवार है' के विश्वास पर आधारित है। उन्होंने 'भारतीय मार्ग' को विजय की बजाय करुणा और धन की बजाय ज्ञान को चुनने वाला बताया, जो तेज़ी से ध्रुवीकृत होते विश्व में सह-अस्तित्व को बढ़ावा देता है। श्री किदवई ने श्रोताओं से "प्रभुत्व नहीं, बल्कि संवाद" अपनाने और "निर्णय लेने से पहले सुनने" का अभ्यास करने का आग्रह किया। "दिमाग की बजाय दिल की कूटनीति" की ज़रूरत पर ज़ोर देते हुए, उन्होंने युवाओं से "कनेक्ट, नॉट कॉन्कुअर" का आह्वान किया।

एम्बेसडर वीरेंद्र गुप्ता ने भारत की समृद्ध संस्कृति और दुनिया भर से विचारों के आदान-प्रदान और आत्मसात करने के इतिहास पर विचार किया और बताया कि कैसे भारतीय भोजन, कला, सिनेमा और मूल्यों ने विभिन्न महाद्वीपों के बीच संबंधों को बढ़ावा दिया है। उन्होंने कहा कि भारत का सांस्कृतिक ताना-बाना वेदों से प्राप्त ज्ञान और अफ़ग़ानिस्तान, फ़ारस और मंगोलिया सहित अन्य देशों से प्रवाहित विविध प्रभावों के आत्मसात से प्रेरित है, जिससे एक जीवंत समग्र विरासत का निर्माण होता है। एम्बेसडर गुप्ता ने भारत के 3.3 करोड़ प्रवासियों की सराहना की और कहा कि रोमा समुदाय को शामिल करने के बाद, वैश्विक भारतीय प्रवासियों की संख्या लगभग 6 करोड़ हो जाती है, जो इसे दुनिया में सबसे बड़ा बनाता है। उन्होंने कहा कि यह प्रवासी "भारत के एकता, सद्भाव और वसुधैव कुटुम्बकम् के संदेश का प्रसार करता रहता है।"

एम्बेसडर गुप्ता ने इस बात पर भी जोर दिया कि भारत का दर्शन, पहले परिवार की ज़रूरतों को पूरा करना, फिर विश्व की ज़रूरतों को पूरा करना, अफ़्रीका जैसे देशों के साथ प्रतिध्वनित होता है, जो भौतिक शक्ति के बजाय पारिवारिक संबंधों और साझा अनुभव के आधार पर भारत के साथ वास्तविक साझेदारी चाहते हैं।

सत्र का समापन करते हुए, आईएस श्री वी. श्रीनिवास ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया को भारत के सबसे प्रतिष्ठित और प्रगतिशील संस्थानों में से एक बनने के 105 वर्ष पूरे होने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि जामिया अपने आदर्श वाक्य 'मनुष्य को वह सिखाया जो वह नहीं जानता था' में निहित उच्च सिद्धांतों और भावना का उदाहरण प्रस्तुत करता है क्योंकि यह विश्वविद्यालय छात्रों की पीढ़ियों के जीवन को प्रकाशित करता रहता है। उन्होंने जामिया की उपलब्धियों की सराहना की और भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को "प्राचीन ज्ञान और आधुनिक व्यावहारिकता का मिश्रण" बताया। नागरिकों और सरकार को करीब लाने में प्रौद्योगिकी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, उन्होंने कहा कि जामिया वैश्विक संबंधों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में अद्वितीय स्थिति में है। उन्होंने भारतीय कूटनीति और नेतृत्व के दो महत्वपूर्ण क्षणों को रेखांकित किया, अर्थात् जी-20 की अध्यक्षता, जिसने भारत के वसुधैव कुटुम्बकम् के दर्शन का उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने आगे कहा, "जी-20 की अध्यक्षता 60 शहरों में एक जन आंदोलन में परिवर्तित हो गई और भारत के वैश्विक सपनों को विश्व मानचित्र पर अंकित कर दिया।" श्रीनिवास ने कहा कि दूसरा क्षण वैश्विक दक्षिण भागीदारी का था, जो 'सभी का विकास और सभी का विश्वास' की भावना पर आधारित है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में, कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ़ ने कहा, "भारत अनादि काल से सांस्कृतिक विविधता और बहुलवाद का केंद्र रहा है। आप किसी भी धर्म, उप-धर्म या भाषाई समुदाय का नाम लें, आपको वह भारत में मिलेगा, जहाँ सभी एक साथ सद्भाव से फल-फूल रहे हैं।" उन्होंने इस बात पर ज़ोर

दिया कि "भारतीय संस्कृति और परंपराएँ कोई आधुनिक आविष्कार नहीं, बल्कि सदियों पुरानी विरासत हैं," और बताया कि जहाँ भारतीय सभ्यता के समकालीन 50 से ज़्यादा प्राचीन सभ्यताएँ लुप्त हो चुकी हैं, वहीं भारत "अपने सांस्कृतिक लोकाचार की शांत गहराई और शक्ति तथा अपनी बहुलतावादी और विविध विरासत की समृद्धि" के कारण फल-फूल रहा है।

फारस के साथ भारत के प्रारंभिक सांस्कृतिक संपर्क पर विचार करते हुए, प्रो. आसिफ़ ने कहा, "पंचतंत्र की कहानियों से लेकर कबीर की शिक्षाओं तक, भारतीय संस्कृति ने हमेशा दुनिया को निस्वार्थ भाव से जीने और सभी की भलाई का ध्यान रखने की शिक्षा दी है। यह याद रखना ज़रूरी है कि भारत ने कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया, और इसके ज़रिए उसने दुनिया को साझा जीवन और सह-अस्तित्व का एक महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाया है।"

बाद में, डीन एलुमनाई अफेयर्स के कार्यालय ने एक पैनल चर्चा सह एलुमनाई मीट और सम्मान समारोह का आयोजन किया, जिसमें जामिया के जाने-माने पूर्व छात्र, श्री हरवीर सिंह, माननीय न्यायाधीश, इलाहाबाद उच्च न्यायालय और एक अन्य एलुमनाई डॉ. हनीफ़ कुरैशी, आईपीएस, अतिरिक्त सचिव, ऑटोमोबाइल डिवीजन, भारी उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। उन्होंने अंसारी ऑडिटोरियम में जामिया के कुलपति प्रोफेसर मज़हर आसिफ़ और रजिस्ट्रार, प्रोफेसर मोहम्मद महताब आलम रिज़वी, डीन एलुमनाई अफेयर्स प्रोफेसर आसिफ़ हुसैन और डीएसडब्ल्यू प्रोफेसर नीलोफर अफज़ल की उपस्थिति में एलुमनाई मीट के दौरान बड़ी संख्या में एलुमनाई को संबोधित किया।

प्रोफेसर रिज़वी ने पूर्व छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के 105वें स्थापना दिवस के अवसर पर इतने सारे पूर्व छात्रों का विश्वविद्यालय में स्वागत करना एक विशेष अनुभूति है। किसी भी विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों को उसकी रीढ़ बताते हुए, जो किसी भी संस्थान के बारे में धारणा बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं, उन्होंने कहा कि आज जेएमआई की उच्च राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग देखकर खुशी हो रही है। उन्होंने पूर्व छात्रों से अपने संबंधों को मजबूत करने और एक मजबूत नेटवर्क बनाने का आग्रह किया और कहा कि मेडिकल कॉलेज और अस्पताल स्थापित करना जामिया के कुलपति प्रोफेसर आसिफ़ का सपना था और उन्होंने पूर्व छात्रों से इस आकांक्षा को पूरा करने में अपने संस्थान का समर्थन करने के लिए आगे आने को कहा। प्रोफेसर नीलोफर अफज़ल ने तालीमी मेले के पुनरुद्धार और इसे 6-दिवसीय विस्तारित समारोहों के साथ अपने पूरे गौरव में वापस लाने के प्रयासों के बारे में बात की, जो पिछले डेढ़ दशकों में नहीं देखा गया था।

न्यायमूर्ति हरवीर सिंह, जिन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया से बी.एससी. (ऑनर्स), एम.एससी. (ऑनर्स), एम.ए., एलएलबी. की डिग्री हासिल की है-और जिन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में 10 साल से ज़्यादा समय छात्र के रूप में बिताया है, उन्होंने जेएमआई के साथ अपने 42 साल पुराने जुड़ाव को याद करते हुए कहा कि "उन्होंने वास्तव में इस संस्थान को कभी नहीं छोड़ा। जेएमआई हमेशा मेरा घर रहा है"। एसआरके हॉस्टल, जामिया लाइब्रेरियन और नगीना स्टोर्स को याद करते हुए, जहाँ वे और उनके दोस्त चाय पीने जाया करते थे, उन्होंने पूर्व छात्रों को अपने संस्थान और समाज के लिए योगदान देते रहने की याद दिलाई।

डॉ. हनीफ़ कुरैशी ने जामिया में बिताए अपने दिनों को याद करते हुए कहा कि जब वे 1992 में बी.टेक की पढ़ाई कर रहे थे और फिर जामिया से एम.टेक, एमबीए और पीएचडी की डिग्री हासिल की, तो आज उन्हें ऐसा लगा जैसे वे 'घर वापस आ गए' हों। उन्होंने जामिया के अन्य प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों, शाहरुख खान और वीरेंद्र सहवाग को भी याद किया, जिनका काम, प्रसिद्धि और अपने-अपने क्षेत्रों में पहचान, जामिया के राष्ट्र के प्रति योगदान को दर्शाती है। उन्होंने आगे कहा, "अब समय आ गया है कि पूर्व छात्र सोचें कि वे अपने संस्थान की सेवा कैसे कर सकते हैं।"

दिल्ली सरकार के राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT) की निदेशक डॉ. रीता शर्मा, जिन्हें आज शाम सम्मानित किया गया, ने 1990 के दशक में जामिया में बिताए अपने दिनों को याद किया और विभिन्न पदों पर देश की सेवा कर रहे अपने कई उत्कृष्ट पूर्व छात्रों के करियर को आकार देने में विश्वविद्यालय के योगदान की सराहना की। डॉ. शर्मा ने आगे कहा, "जामिया ने मुझे सबसे महान मूल्य - तालीम, तहज़ीब और तरबियत - सिखाए।"

इस अवसर पर, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के ललित कला संकाय के चित्रकला विभाग के संकाय सदस्य श्री शाह अबुल फैज़ द्वारा डिज़ाइन किया गया कैलेंडर भी जारी किया गया।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी